समकालीन हिंदी उपन्यास में चित्रीत महिला

प्रा. शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन
हिंदी विभाग,
कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
बदनापुर, जि. जालना

'स्त्री जीवन का ब्रेदवाक्य, न सन्मान का मोह।
न अपमान का भय। कर्तव्यपूर्ती यही जीवन का ध्येय।'

स्त्री मानव सृष्टि का अपरिहार्य अंग है जो आदिकाल से हमारी सभ्यता-संस्कृति और साहित्य के साथ जुही है। वैदिक कालीन साहित्य में स्त्री को सर्वश्रेष्ठ स्थान था। यज्ञानुष्ठान में स्त्री का अपने पति के साथ होना ही स्त्री की अनिवार्यता एवं महत्ता को प्रकट करता है। हिंदी साहित्य में स्त्री के विषय में प्रबल विरक्ति एवं उत्कृष्ट अनरक्ती जैसी विरोधी विचारधारा मध्यकाल तक चलती रही। एक तरफ शक्ती स्वरूपा मानी गई तो दुसरी तरफ अबला । पुरूषों ने तो उसे अनेक नाम दिये हैं। लेकिन एक स्त्री ही स्वयं को पूरी तरह से जान-समझ नहीं पाई है. क्योंकि स्त्री के अनेक रूप होते हैं। स्त्री मुक्ति, स्त्री विमर्श तो मानसिक रूप से ही होता है जिसका रूप सशक्त है जो समकालीन महिला लेखिकाओं के उपन्यास में चित्रीत हुआ है। समकालीन महिला उपन्यासकारों के साहित्य की स्त्री का रूप बोल्ड होकर सामने आता है। स्त्री लेखन की मूल संवेदना स्त्री मुक्ती के प्रश्नों के साथ बड़ी गहराई से जुड़ी है। हमारे भारतीय समाज में आदिकाल से ही पुरुष नारी शक्ति स्वरूप देवी की पूजा अर्चना या देवी सर्वभूतेष के मंत्रोच्चारण से करते आ रहे हैं, लेकिन जब किसी औरत के मान-मर्यादा की बात आती है, तब वे विदक जातेहैं। इस दोहरेपन का श्रेय बहुत हद तक हमारे मनुस्मृति और अन्य शास्त्रों को जाता है, जिसमें खी को घर की सजावट और पुरुषों के मन बहलाने का खिलौना माना गया है। अन्यथा द्रोपदी दाँव पर न लगती, सत्य हरिश्चंद्र अपने दान की दक्षिणा चुकाने के लिए अपनी पत्नी चंद्रमति को न बेचते, रामायण की सीता को अग्नी परीक्षा न देनी पड़ती। हमारे शास्त्रों में इस तरह की कहानियों या किस्सों से साफ जाहीर होता है कि, उस समय हमारा समाज कितना मनुवादी था।

नारी के आत्मबोध, आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के समकालीन उपन्यासों में जो नारी चित्र उभरकर सामने आया है उन्हें तीन वर्गो में बाँटा जा सकता है उच्च, मध्यम, निम्न। नारी इनमें से किसी - भी वर्ग की हो लेकिन उसका अपना एक स्वतंत्र रूप सामने आता है। पहले वर्ग में यदि वह डॉक्टर, प्राध्यापक, अधिकारी, नेता है तो वह विद्रोह और रूढींयों को चुनौती देती हुई महत्वाकांक्षिणी के रूप में सामने आती है। मध्यमवर्गीय चरित्र में नारी दोहरे मानदंडों से जुझते हुए झूठी इज्जत के कारण अनेक प्रकार के कष्ट भोगने के लिए बाध्य है, यदि वह शिक्षित है फिर भी। लेकिन तिसरे वर्ग की नारी का चरित्र आज सर्वाधिक सशक्त है, वह विद्रोह और रूढ़ियों को खुलकर चुनौती दे रहा है। समाज के बंधन और मर्यादा की परवाह न करके अपनी आत्मा और स्वाभिमान की रक्षा करता है।

समकालीन महिला उपन्यास साहित्य में महिला लेखिकाओं की विशीष्ट भूमिका रही है। शशिप्रभा शास्त्री, मृदूला गर्ग, दिनेश नंदिनी डालमिया, शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, मंजुला भगत, चंद्रकांता, कुसुम कुमार, ममता कालिया, मेहरुन्निसा परवेज, चित्रा मुद्गल, सुर्यबाला, मृणाल पांडे, नासिरा शर्मा. निरुपमा सोबती, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, वीणा सिंहा, गीतांजलि श्री, मालती जोशी जैसे अनेक नाम चर्चित है, जिन्हें न केवल महिला लेखन में बल्कि संपूर्ण उपन्यास साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अधिकांश लेखिकाएँ मध्यमवर्गीय संस्कृति से जुड़ी रही है। अतः उनकी कृतियों मे मध्यमवर्गीय आधुनिक नारी की संवेदना ही मुख्य रूप से चित्रित हुई है।

मैत्रीयी पुष्पा :-

मैत्रीयी पुष्पा समकालीन महिला लेखिकाओं में प्रमुख स्थान रखती है। मैत्रेयी पुष्पाने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा को उजागर किया है। उन्होंने बेतवा बहती रही में गरीब परिवार में स्त्री उर्वशी के संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। वह विपन्न मानसिकता से ग्रस्त समाज में केवल भोगवस्तु बनकर रह जाती है। विधा उर्वशी को सगे भाई द्वारा दस बीघा खेत के लालच में पिता के उम्र के बरजोर सिंह को बेचा जाता है। उर्वशी स्वयं अन्याय के आग में जलती है परंतु दूसरों के साथ अन्याय नहीं होने देती। अपनी विधवा बहु का विवाह करवा विधवा विवाह को करार देती है। मैत्रेयी के अनुसार ऐसी समाज व्यवस्था, जिसमें धर्ता त्री-पुरुष हो, वियों का सपना है।'

शशिप्रभा शास्त्री :-

शशिप्रभा शास्त्री का उपन्यास नावे की मालती अपने परिवार के लिए मरती उपटी है। आधुनिक युग की नारी से संबंधित और एक समस्या है स्त्री-पुरुष के अहं की टकराहट। इस टकराहट के कारण अनेक परिवार टूट रहे हैं। आज की नारी स्वावलंबी, सचेत, आत्मनिभर होकर भी तनावों के घेरे में घिरी है। नोकरी पेशा नारी की समस्या, जाति प्रथा समस्या, दहेज समस्या, ऐसी अनेक समस्याओं से उसे जुझना पड़ता है।

नासिरा शर्मा :-

नासिरा शर्मा हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका मुस्लिम समाज से जुड़ी है। उनके ठीकरे को मंगनी उपन्यास में अपनी अनुभूतियाँ को प्रस्तुत करती है। यह उपन्यास मुस्लिम समाज की खियों की रूढि एवं परंपराओं को उजागर करता है। उनके उपन्यास की स्त्री मुस्लिम रूढ़ि-परंपराओं से ग्रस्त माहौल की घुटन से बाहर निकलने के संघर्ष दास्तान है। इस उपन्यास में नारी चेतना का प्रतिनिधित्व एवं उसकी प्रगल्भता का परिचयात्मक विवेचन है। परंपरा और आधुनिकता, खानदानी रिवायतों से जुड़े, भारतीय समाज से जुड़े स्त्री की परिवर्तित स्त्वती के नामपर पाश्चमात्यीकरण की अंधी दौड़ पर नासिरा शर्मा ने अपनी लेखनी उठाई है। ठीकरे की मंगनी में महरुख आम स्त्रियों का प्रतिनिधीत्व करती है। जिसके दिलो दिमाग पर हर समय अपने परिवार की बिरादरी की इज्जत बनाये रखने का विचार रहता है। नासिरा शर्मा मुस्लिम नारी की पीड़ा व्यक्त करने में सक्षम रही है, यह उसी पृष्ठभूमि में पलकर बड़ी हुई है उनका यह उपन्यास अनुभूतिजन्य साहित्य का सृजन है।

उषा प्रियंवदा :-

इनके उपन्यास पचपन खंबे लाल दीवारे' 'रुकोगी नहीं राधिका', 'शेष यात्रा' चर्चित रहे हैं। 'पचपन खंबे लाल दीवारें' की नायिका सुषमा ने अपनी इच्छाओं-आकांक्षाओं का त्याग अपने परिवार के दायित्व निर्वाह के लिए किया है। नारी जीवन की त्रासदी को उपन्यास में चित्रीत किया है। पचपन खंबे लाल दीवारें यह उपन्यास कथ्य की दृष्टि से साधारण होते हुए भी शिल्प वैशिष्ट्य के कारण महत्त्वपूर्ण बन गया है। प्रस्तुत उपन्यास अविवाहिता स्त्री के मन की पीड़ा को उजागर करता है।

कृष्णा सोबती :-

समकालीन महिला लेखिकाओं में से एक है। इनके उपन्यास में संपूर्ण परिवेश का चित्रण मिलताहै। इनके उपन्यास की नारी ईमानदार है। डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी यारों के यार, तीन पहाड़. 'सुरजमुखी अंधेरे के तथा जिंदगीनामा' और 'दिलोदानिश' उनकी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ है। 'डार से बिछुड़ी' नामक उपन्यास में पाशों नामक युवती के शोषण का अंकन हुआ है। 'मित्रो मरजानी' इस उपन्यास में मित्रो नामक युवती की कथा है, जो परंपरागत बंधनों बंधी रहना अम्वीकार करती है। उसे एक सभ्य परिवार की बहु के समान दबे ढके रहने का तौरतरीका नापसद है, वह ऐसी नारी है, जो अपनी भावनाएँ खुलेआम प्रस्तुत करती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में कृष्णा सोबती का बोल्ड रुप खुलकर सामने आता है ।

प्रभा खेतान :-

प्रभा खेतान समकालीन महिला लेखिकाओं में सदा चर्चित रही है। उन्होंने 'आओ पेपे घर चले', 'पीली आँधी', 'अपने-अपने चेहरे', 'अग्नी संभवा', 'स्त्री पक्ष', 'छिन्नमस्ता' इन उपन्यासों के माध्यम से स्त्री की दासता को उजागर किया है। 'आओ पेपे घर चले' नारीवादी विमर्श का सफल उपन्यास है। इस उपन्यास में अमेरिका के स्त्री जीवन के एकाकी जीवन को बड़ी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। इस उपन्यास की पात्र आईलिन औरत की दयनीय दशा की ओर संकेत करती हुई कहती है, औरत कहाँ नहीं रोती औरत कब नहीं रोती? वह जितना रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है। आईलिन के मुँह से कहलवाई गई यह बात प्रभा खेतान की नारीवादी विचारधारा की द्योतक है। हिंदी उपन्यास में भारतीय स्त्री पीड़ा का चित्रण तो अबतक अनेक रूपों से हो चुका था परंतु अमरीकी स्त्री के जीवन का सच प्रस्तुत करनेवाला यह हिंदी का पहला उपन्यास है।

लता शर्मा :-

पारंपारिक स्त्री चिंताओं की लीक से हटकर लिखने वाली लेखिका के रूप में लता शर्मा सबसे ऊपर है। 'सही नाप के जूते' उपन्यास की लेखिका की प्रतिभा या शक्ति दिखाई देती है सौंदर्य प्रतियोगिताओं के जीवंत वर्णन में प्रस्तुत उपन्यास शुरू से अंत तक कथा पाठक को बहाता है, रमाता है किन्तु नग्न यर्थाथ से सामना कराता है। यह स्त्री-विमर्श और बाजारवाद के प्रभाव का संतुलित और निरपेक्ष मुल्यांकन है। इस उपन्यास की नायिका मध्यवर्ती चरित्र

उवर्शी वैश्वीकरण की चकाचौंध में बहता जानेवाला पात्र है। उर्वशी की माँ उसे विश्वसुंदरी बनने का स्वप्न दिखाती है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखिका हमें आगाह करवाना चाहती है कि, औद्योगिकीकरण, वैश्वीकरण, बाजारवाद की दौड़ में हम रिश्ते-नाते, नैतिकता, मानवता, परंपरा को कितना पिछे छोड़ आये है. हमारे परिवारिक सबंध आत्मकेंद्री एवं मतलबी बन गये हैं। प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री शोषण के विविध रूपों को उजागर किया है।

चित्रा मुद्गल :-

चित्रा मुद्गल का 'आँवा' उपन्यास स्त्री की स्थिति-गति का अंकन है। परिवार में सुरक्षा के यथार्थ और परिवार के बाहर स्वतंत्रता के अर्थों के संदर्भ में परिचित कराता हैं। समाज में बेटा-बेटी में फर्क किया जाता है यह रवैया प्रत्येक स्त्री मन को कचोटता है। 'आँवा' में लेखिका ने बेटा और बेटी के प्रति परिवार के रवैयों को प्रस्तुत किया है। बड़ी बेटी माँ के साथ परिवार के भरण-पोषण के दायित्व को निभाती है, घर-परिवार के बारे में सोचती है, लेकिन एक माँ स्वयं स्त्री होकर अपने बेटी के हर हुनर को कम नापती है। पराया धन समझकर छोटी बेटी को हिंदी माध्यम में और बेटे को बड़ी मोटी फिस देकर अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाती है। यह वातावरण स्त्री के अवचेतन में गैर-बराबरी की भावना को जागृत कराता है, और एक स्त्री को स्त्री के विरूद्ध खड़ा करवाता है। उपन्यास में लेखिका बेटी के खिलाफ परिवार को खड़ा कराती है और बेटी को बेटे के विकल्प के रूप में खड़ा कर पिता के क्रिया कर्म में सहयोग करवाती है। पुरुषप्रधान संस्कृति का विरोध करने में लेखिका सफल रही है।

मालती जोशी :-

मालती जोशी एक प्रसिद्ध समकालीन महिला लेखिका है जो नारी दशा को नवीन रूप से प्रकट करने का भरसक प्रयत्न करती है। 'पाषाण युग' उपन्यास में नारी समस्या को नवीन मूल्यों के आधार पर पीड़ा का अवलोकन करते दिखया है। पीड़ा के चित्रण के साथ ही नारी मन की समर्पण भावना का भी एक नया मोड़ देकर संघर्ष की स्थिति को समझया है। प्रेम में केवल स्वार्थ की पूर्ति और दिखावे का विस्तार कर जीवन में केवल अजनबीपन, एकाकीपन ही शेष रह जाता है। अपने उपन्यासों में लेखिका पुराने विचारों को विरोध कर नवीन प्रतिमानों को स्थापित करना लेखिका का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

तसलीमा नसरीन :-

तसलीमा नसरीन मूलतः नारीवादी लेखिका है। वे स्त्री की पूर्ण स्वाधीनता की पक्षधर है। अपने अनुभवों से वे यह अच्छे तरह जानती है कि स्त्री के साथ होनेवाला अन्याय व्यापक सामाजिक अन्याय ही है। इसलिए वह यह भी देख सकी की कट्टरवाद सिर्फ अल्पसंख्यांको का ही विनाश नहीं करता, बल्कि बहुसंख्यकों का भी जीवन दूषित कर देता है। उनके 'लज्जा' उपन्यास में सूरंजन और परवीन एक दूसरे से प्यार करने के बावजूद विवाह के बंधन में नहीं बंध सके, क्यों कि दोनों के बीच धर्म की दिवार थी और माहौल धर्मोन्माद से भरा था। धर्मान्माद के माहौल का सबसे ज्यादा कहर स्त्री पर ही टूटता है, उसे तरह-तरह से सीमित और प्रताड़ित किया जाता है। भारतीय संदर्भों में नारी शोषण का एक लंबा इतिहास है।

ममता कालीया :-

इनका का उपन्यास 'नरक दर नरक' की नायिका सीता, साधना कॉलेज में हिंदी प्रवक्ता है। अत्याधिक मेहनत करके वह घर एवं कॉलेज की जिम्मेदारी बड़ी कुशलता से निभाती है, किन्तु उसका पति कॉलेज जाने और वहाँ से लोटने में कितने पैसे रिक्शे में लगते हैं, उसका वेतन कहाँ और कितना खर्च है, उसके साड़ी का छपा और रंग इन सबका निर्धारण विनय के हाथ में था। ऐसी स्थिति में प्रेम प्रसंग भी संभावना बची ही नहीं थी। रोने के सिवा उसके पास चारा न था।

शिवानी :-

समकालीन महिला उपन्यासकारों मे शिवानी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। विवर्त' उनका मुख्य उपन्यास है। 'विर्वत' में नारी जीवन से संबंधित पीड़ा का चित्रण अतिरेक या पक्षपात द्वारा नहीं किया गया है। अपने उपन्यास में छिपी शक्तियों को पहचाना है। वहीं उनकी कमजोरियों और सिमाओं को निरपेक्ष भाव से अंकित किया है। इनकी दृष्टि समकालीन लेखिकाओं में अपेक्षाकृत अधिक संतुलित है।

राजी सेठ :-

इनके उपन्यास 'तत्सम' में आधुनिक नारी के पुनर्विवाह की समस्या को गहरे भावनात्मक स्तर पर प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिका का मन पति के मृत्यु के पश्चात पुनर्विवाह के लिए मान्यता नहीं देता। एक संवेदनशील स्त्री के लिए दूसरा विवाह करना मनोवैज्ञानिक समस्या है वसुधा मूल्यों और संस्कारशीत मन के कारण उलझी रहती है और निर्णय लेने में अकार्यक्षम रहती है। उसकी पीड़ा और बैलेनी का किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अनुमान लगा पाना संभव नहीं।

लेखिका 'सीमोन द बोऊवार' ने पितृसत्ताक समाज पद्धति का परीक्षण प्रस्तुत किया है। साथ ही खी मुक्ति के लिए नया मार्ग भी बताया है। कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, गगननिल महाश्वेता देवी आदि लेखिकाओं ने स्पष्ट कहा है कि स्त्री का दमन परिवारों की मूल्य व्यवस्था में किया है। वे सभी मानती है कि सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्री का स्तर कुछ भी क्यों न रहा हो लेकिन परिवार में आते ही वह दमन का शिकार होने लगती है। सदियों से चली आ रही अपनी चुप्पी को नारी ने तोड़ दिया है। वह अपने अनुभवों, दुःखों, तकलियों को व्यक्त करने लगी है। इस संदर्भ में प्रभा खेतान का कहना है कि, 'स्त्री ना कभी गुलााम रहना चाहती है और ना पुरुषों को गुलाम बनाना चाहती है, स्त्री चाहती है, मानवीय अधिकार ।

महादेवी वर्मा के अनुसार 'हमे न किसी पर जय चाहिये न किसे से पराजय, न किसी पर प्रभुत्व चाहिए. केवल अपना वह स्थान वे स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नही है, परंतु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग बना नहीं सकेगी। ''महिला लेखन से महिलाओं को पूर्ण रूप से फीडबैक मिलता है। नारी लेखक नारी मन की ही अभिव्यक्ति है। नारी ने नारी की गूँगी पीड़ा को लिखा, उजागर किया, उसके मौन शब्द दिये। पुरुष

लेखक के लिए नारी रूमानी ख्याल, यादों की मूरत थी। बेशक नारी लेखन ने पुरुष लेखकों के हाथ से उनकी सुंदर, बेजुबान गुड़िया छीन ली है और रोती, चीखती, बिलखती कलपती नारी को सामने ला खड़ा किया है।''

निष्कर्ष के रूप में यह कहना उचित होगा कि महिला लेखिकाओं एवं महिला लेखन का साहित्य में प्रवेश युग के संदर्भ में व्यापकता प्रदान करता है। प्राचीन काल की तुलना में समकालीन नारी मुक्ति की चेतना आज के बढ़ती दिखाई देती है। महिला लेखिकाओं ने स्त्री जीवन के गंभीर विषयों को सहजता से प्रस्तुत किया है। उनके स्त्री बिंबों में कहीं-कहीं प्रतिरोध स्थितियाँ आवेश के साथ दिखाई देती है। उसमें स्त्री की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि एक सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती है। यह कहना गलत न होगा कि नारी की अस्मिता के लिए, आत्मसम्मान के लिए हिंदी साहित्य में लेखनी चल रही है। महिला लेखिकाओं के साथ-साथ पुरुष लेखकों ने भी अपनी लेखनी चलाई है लेकिन उसमें उतनी गहराई एवं गति नहीं। कुछ भी हो, हिंदी साहित्य में साहित्यकार अपनी बँधी- बँधाई परिधि से बाहर निकल चुके हैं और सत्यता के धरातल पर खड़े होकर सत्य को साहित्य के माध्यम से परोसने का काम कर रहे हैं।

हिंदी समकालीन महिला उपन्यासकार अपने उपन्यासों में सदाचार, मर्यादा, स्वाभिमान, प्रेम, कर्तव्य-बोध,सामाजिक दायित्व आदि अनेकाक मूल्यों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में अभिव्यक्त करती है। अंतः यही कहना चाहूँगी कि विश्वभर में प्रचलित सामाजिक परंपराएँ, धार्मिक रूढ़ियाँ, पुरुषप्रधान संस्कृति एवं लिंग भेद जब समाप्त होगा तभी स्त्री-पुरुष स्वतंत्र एवं खुशहाल जीवन का सुख प्राप्त कर सकेंगे।

इतने सारे प्रश्न चिन्ह क्यों इतनी सारी शंकाएँ,
क्या मेरे लिए ही बनी है सारी लक्ष्मण रेखाएँ?
युग बीतें पर बदल न पाये दोहरे मानदंड जग के,
सिहासन पर राम विराजे, निर्वासित है सिताएँ।'

ऐसे अनेक प्रश्न स्त्री लेखिकाओं के मन में उमड़ते है, लेकिन वे अनुत्तरित ही रह जाते हैं।'

संदर्भ ग्रंथ सूची

१) स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ- रेखा कस्तवार

(२) महादेवी वर्मा-श्रृंखला की कड़ियाँ

३) तसलिमा नसरीन-लज्जा

४) उषा प्रियंवदा- पचपन खंबे लाल दीवारें

५) चित्रा मुद्गल- आँवा

६) प्रभा खेतान- आओ पेपे घर चलें